वाल्मीकि रामायण में राजनीतिक तत्त्व

डॉ० रामेश्वर प्रसाद गुप्त

Scanned with CamScanner

वाल्मीकि रामायण

में

राजनीतिक तत्त्व

डॉ० रामेश्वर प्रसाद गुप्त
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी), स्वर्णपदक प्राप्त
पी-एच० डी०
आचार्य एवं अध्यक्ष,
शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
दतिया (म० प्र०)

ईस्टर्न बुक लिंकर्स
दिल्ली :: (भारत)

Scanned with CamScanner

५८२५, न्यू चन्द्रावल, जवाहर नगर,
दिल्ली-११०००७

© लेखक

प्रथम संस्करण : १९९५

ISBN : 81-86339-19-1

RS. 500/2

मुद्रक :
शाम प्रिंटिंग एजेन्सी (अमर प्रिंटिंग प्रस)
१/३६ ए, डबल स्टोरी, विजय नगर, दिल्ली-९

Scanned with CamScanner

विषयानुक्रमणिका

प्रास्ताविक vii

निवेदन xi

भूमिका १-१८

राजनीति की परिभाषा, राजनीति का महत्त्व, साहित्य में राजनीति के कार्य की संक्षिप्त रूपरेखा, राजनीति तथा वाल्मीकि रामायण।

प्रथम अध्याय—वाल्मीकि और उनकी रामायण १९-५९

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि—समय एवं जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व। रामायण-परिचय, आदिकाव्य, रामायण के संस्करण, समय, स्रोत, मूल एवं प्रक्षिप्त अंश, रामायण का महत्त्व, रामायण पर आलोचनात्मक कार्य, रामायण का उपयोग।

द्वितीय अध्याय—रामायण में राज्यों का संगठन ६०-८४

राज्य की परिभाषा, राज्य का उद्भव, रामायण में राज्यों का संगठन, रामायणानुसार राज्य के कार्य एवं उद्देश्य, रामायण में एकतन्त्र और उसका स्वरूप, रामायण में राज्यों का वर्गीकरण।

तृतीय अध्याय—रामायणकालीन शासन व्यवस्था ८५-२१२

राजतन्त्र शासन, राजा, राजा की उत्पत्ति, रामायण में राजपद, राजा का व्यक्तित्व, राजकुमार की शिक्षा, राजा का निर्वाचन, राज्याभिषेक, राजचिह्न, राजा की प्रतिज्ञा,

Scanned with CamScanner

राजा पर नियन्त्रण, राजा की दिनचर्या, राजा के कर्त्तव्य एवं अधिकार, राजा को सुविधाएँ, राजा की दिग्विजय, राजा का देवत्व, राजा का अधिकार-परित्याग, राजा का आदर्श, राम एक आदर्श राजा, रामराज्य का आदर्श।

मन्त्री—महत्त्व, मन्त्रियों की नियुक्ति, मन्त्रियों की संख्या, मन्त्रियों के प्रकार, पुरोहित, मन्त्रियों की योग्यता, मन्त्रियों के कार्य, मन्त्रियों के पदों का विभाजन, विभिन्न विभाग, मन्त्रिपरिषद्, मन्त्रियों का आवास, पहनावा, वेतन, राजा, मन्त्री, तथा मन्त्रणा, मन्त्रणा के प्रकार, तीर्थ, अन्य-पदाधिकारी।

सभा—सभा का गठन, पौरजानपद, नैगम, श्रेणी, सभा सदस्यों की योग्यता, सभापति, सभाभवन, सभा की बैठक, रामायण में सभा—एक दृष्टि (सभा की कार्यवाही), अयोध्या और लङ्का की सभा—एक समालोचना, सभा के कर्तव्य, सभा के अधिकार, रामायणकालीन सभा की विशेषताएँ, रामायण में मन्त्रिपरिषद् और सभा।

कोष—महत्त्व, आय के स्रोत, कर लेने की विधि, राज्य की आय का व्यय, विशेष।

न्याय—महत्त्व, न्याय का आधार 'विधि, रामायण में विधि के स्रोत, न्यायालय, न्याय सभा का संगठन, न्यायाधीशों की योग्यता, न्यायपद्धति, न्याय की विशेषताएँ।

दण्ड—रामायण में दण्ड का महत्त्व, दण्ड व्यवस्था, दण्डधर, अपराधी, अपराध, दण्ड के सिद्धान्त, दण्ड के प्रकार।

रामायणकालीन प्रशासन—एक दृष्टि—रामायण में विधि एवं संविधान, सरकार, रामायण में व्यवस्थापिका, कार्य-पालिका, सचिवालय, न्यायपालिका, केन्द्रीय एवं ग्रामीण प्रशासन, रामायणकालीन शासन की विशेषताएँ, गुप्तनीति, रामायणकालीन शासन के दोष।

चतुर्थ अध्याय—रामायणकालीन सैनिक संगठन तथा युद्ध २१३-२६७

सैनिक संगठन की आवश्यकता, रामायण में सैनिक संगठन, सेना का प्रधान—राजा, सेनापति, सेनापति की नियुक्ति, सेना—चतुरंगबल, विभिन्न सैन्य श्रेणियाँ, स्थल सेना, वायु सेना, नौ सेना, सेना की संख्या, सैनिकों का प्रशिक्षण, सारथी, दूत, गुप्तचर, शिविरनियन्ता, सैनिक, अनुशासन, सैनिकों को सुविधाएँ।

अस्त्र-शस्त्र—सुरक्षात्मक आयुध, आयुधागार।

मित्र—मित्र के प्रकार, मित्र के प्रति व्यवहार, मित्र के कर्तव्य।

दुर्ग—दुर्ग के प्रकार, सुरक्षा एवं सुविधा।

युद्ध—युद्ध के प्रकार, युद्ध के कारण, युद्ध का समय, यान, शिविर की व्यवस्था, युद्ध की तैयारी, युद्ध की घोषणा, युद्ध का आरम्भ, दुर्गों का विध्वंस, युद्ध के समय सावधानी, युद्ध में उत्साह, रामायण में युद्ध और उसके विविध रूप, कूटयुद्ध, आकाशयुद्ध, युद्ध में विजयार्थ यज्ञ, युद्ध में षड्गुण एवं चार नीतियाँ, युद्ध के नियम, युद्ध में सैनिकों की चिकित्सा, युद्ध में मृत सैनिकों का प्रबन्ध, युद्ध में बन्दी, युद्ध के पश्चात् विजित राज्य के प्रति व्यवहार, राक्षसों की हार के कारण।

रामायण में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

पञ्चम अध्याय—रामायणकालीन समाज, धर्म और राजनीति २६८-३०६

रामायणकालीन समाज का गठन, वानरों की मनुष्यत्व सिद्धि, वानर नामकरण, राक्षसों की मनुष्यत्व सिद्धि, राक्षस नामकरण, रामायण में वर्णव्यवस्था, आश्रम

Scanned with CamScanner

व्यवस्था, रामायणकालीन समाज की सभ्यता संस्कृति, उत्तरभारत के आर्यों की सभ्यता, उत्तर भारत के आर्यों की संस्कृति, वानरों की सभ्यता, वानरों की संस्कृति, राक्षसों की सभ्यता, राक्षसों की संस्कृति, रामायणकालीन समाज की तीन प्रमुख विशेषताएँ, रामायणकालीन समाज—एक आलोचनात्मक दृष्टि, रामायणकालीन समाज के दोष, रामायकालीन धर्म, धर्म की परिभाषा, रामायण में धर्म के प्रकार, रामायणानुसार धर्म और राजनीति।

उपसंहार ३१०-३१

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची ३१३-३१

NEW RELEASES FOR E.B.L.

1. ENCYCLOPAEDIA OF VEDĀNTA – Prof. Ram Murti Sharma (1993) 450.00
2. BUDDHIST PHENOMENOLOGY : A THERAVĀDA PERSPECTIVE—Chandra B. Varma (1993) 200.00
3. THERAVĀDA BUDDHISM (Based on Pāli Sources) —RONALD, S. Copleston, Ed. by Harcharn Singh Sobti (1993) 250.00
4. ESSAYS ON BUDDHISM AND PĀLI LITERATURE —Angraj Chaudhary (1994) 250.00
5. VIJÑAPTIMĀTRATĀSIDDHI (VIMŚATIKĀ) with Introduction, Translation and Commentry)— T. R. Sharma (1993) 150.00
6. THE GANDHAVAMŚA (A History of Pāli Literature) —Bimalendra Kumar (1992) 90.00
7. SATYA-SUDHĀ (A Critical Evoluation of Dr. Satya Vrat Shastri Creative Works)—Ed. Satya Vrat Varma (1993) 700.00
8. WORD INDEX TO THE VĀKYAPADĪYA OF BHARTṚHARI—Prof. Saroja Bhate & Yashodhara Kar (1992) 450.00
9. GLORY THAT WAS BUNDELKHAND (श्री महेन्द्रकुमार मानव अभिनन्दन ग्रन्थ) —Ed. Prof. K.D. Bajpai (1993) 800.00
10. ŚAKTIVĀDA : Theory of Expressive Power of Words —Dr. V. P. Bhatt (1994) 300.00
11. BHĀVNĀVIVEKA OF MAṆḌAN MIŚARA (English Translation with Notes)— Dr. V. P. Bhatt (1994) 300.00
12. A CONCISE ENCYCLOPAEDIA OF EARLY BUDDHIST PHILOSOPHY—Chandra B. Varma (1992) 300.00
13. DURGĀ : THEME IN VARANASI WALL PAINTINGS—Prem Shankar Dwivedi (1993) 300.00
14. POETRY CREATIVITY AND AESTHETIC EXPERIENCE—Dr. Natwar Lal Joshi (1994) 300.00

Please mail your order to : Ph. : 2520287

Eastern Book Linkers

(INDOLOGICAL PUBLISHERS & BOOKSELLERS)

5825, New Chandrawal, Jawahar Nagar, DELHI-110007

Scanned with CamScanner